Executive Summary

हिंदी मराठी उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन
(इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के विशेष संदर्भ में)

विवेच्य उपन्यास साहित्य में कृषक जीवन पारंपारिक रूप में ही अधिक दृष्टिगोचर होता है तथा कुछ हद तक विकसनशील तथा परिवर्तनशील रूप में दृष्टिगोचर होता हुआ दिखाई देता है । भारत एक कृषि प्रधान देश है ऐसा हमारे देश के कर्णधार बार-बार कहते हैं पर इस कृषि प्रधान देश को आजादी के ७० साल बाद भी केवल पंजाब का अपवाद छोड़कर सिंचाई की सुविधा १००% उपलब्ध कराने हमारे देश के कर्णधार नाकाम हुए दिखाई देते हैं। देश के किसानों को आज भी बरसात पर निर्भर होकर खेती करनी पड़ती है। बरसात पर खेती याने पूरी तरह से बेभरोसे की खेती है। इसका चित्रण विवेच्य उपन्यासों में हुआ दिखाई देता है। प्राकृतिक आपदा एक महत्त्वपूर्ण कारण है जिससे किसानों की फसल को हानि पहुंचती है। कभी अतिवृष्टि, ओलावृष्टि तो कभी अनावृष्टि के कारण भारत के किसी न किसी राज्य को गीले तथा सूखे अकाल का सामना करना पड़ता है। नतीजन उसकी फसल मारी जाती है। इसका चित्रण विवेच्य विषय के सभी उपन्यासों में दिखाई देता है।

प्राकृतिक आपदा के साथ किसान के फसल को मिलनेवाला मूल्य बहुत कम होना जो किसान की खस्ता हालत बनाने का महत्त्वपूर्ण कारण है। भारतीय कृषि व्यापार की दो खामियाँ हैं- जब खेती में पैदावार अच्छी होती है तब उसका दाम गिराया जाता है और जब बाजार में फसल के दाम आसमां पर होते हैं तब किसान के पास पैदावार बहुत कम होती है। इस व्यवस्था का खामियाजा भारतीय किसान को ही भुगतना पड़ता है। उत्पादन खर्च को आधार मानकर उसके फसल की कीमत तय होती हुई दिखाई नहीं देती है। सरकार फसल का जो समर्थन मूल्य घोषित करती है वह भी देर से उसके पहले किसान को अपनी फसल व्यापारियों बिचौलियों को कम दाम लेकर बेचनी पड़ती है क्योंकि उसके पीछे साहूकार का ऋण चुकाने का तकाजा, उधार लिए खाद, बीज तथा दवाईयों का पुराना बील चुकाने दुकानदार का तकाजा, कृषिकर्म, घर गृहस्थी चलाने पैसों की जरूरत आदि कई कारणों से उसे मजबूरन अपनी फसल कम दाम पर बेचनी पड़ती है। सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य इतना कम होता है कि उससे फसल निर्माण के लिए किया हुआ खर्च और किसान की मजदूरी आदि को मिला दिया जाए तो किसान के हाथ खाली ही रह जाते हैं। इसका चित्रण बारोमास, छावनी, कापूसकाळ, अकाल में उत्सव, फाँस, साखरफेरा आदि उपन्यासों में हुआ दिखाई देता है।
ऋणग्रस्त होना भारतीय किसान को मिला पारंपरिक अभिशाप ही है। एक बार किसान ने ऋण लिया तो उससे वह उऋण होता दिखाई नहीं देता। संजीव ने 'फाँस' उपन्यास में लिखा है, 'भारतीय किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है। यह सही है। साहूकार के चंगूल से भारतीय किसान को मुक्त करने बैंकों से ऋण दिया जाने

लगा, पर बैंक से लिये ऋण से भी वह उऋण नहीं हो रहा है। इसका कारण है प्राकृतिक आपदा, सिंचाई का अभाव, उत्पादन खर्च को आधार मानकर फसल की मूल्य निश्चिती न होना आदि इसके प्रधान कारण है। बैंक से लिया ऋण चुकाया न जाने पर बैंक उस किसान को दुबारा ऋण नहीं देती । मजबूरन किसान को साहूकार के दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं और के ब्याज दर से वह उऋण नहीं होता। नतीजतन वह आत्महत्या करता दिखाई देता है। 'अकाल में उत्सव' के
रामप्रसाद, 'छावनी' के गणपा, 'बारोमास' के सुभानराव, रावसाहेब, 'फाँस' के शिबू, आशा आदि कुछ इसके प्रातिनिधिक उदाहरण हैं।
भारतीय किसान आज भी अज्ञान में ही जीवन निर्वाह करता दिखाई देता है। वह अपनी खेती के लिए अपने पारंपारिक ज्ञान को ही आधार मानकर खेती करता दिखाई देता है, जिससे उसकी कम पैदावार होती है । 'कापूसकाळ' उपन्यास के मधू ने कृषि शिक्षा पाई है, वह किसानों को जमीन का स्तर और पानी की सुविधा देखकर फसल बोने की सलाह देता है लेकिन की मधू बातें किसानों के गले नहीं उतरती । परिवार नियोजन का अभाव किसानों में दिखाई देता है । 'कंदील' उपन्यास के रणसिंह पार्वती के छः बच्चे हैं। झूठी शान-शौकत, नशापान, दहेज, किसान पुत्रों का विदेश मोह, कामचोर तथा निठल्लापन की प्रवृत्ति भी किसानों के लिए मारक साबित होती है। 'कंदील' उपन्यास के डू, 'मिले सूर मेरे तुम्हारे' के सत्ता, 'बारोमास' के मधू आदि खेत में कामकाज से जी चुराते दिखाई देते हैं। शादी ब्याह में होनेवाला खर्चा किसानों को दरिद्रता की खाई में ढकेल देता है। 'कंदील' उपन्यास के रणसिंह, 'मिले सुर मेरे तुम्हारे' के सुरजनसिंह आदि अपने बेटे तथा बेटियों के शादी में किए खर्च के कारण ऋणग्रस्त बन गए दिखाई देते हैं। सिंचाई सुविधा का अभाव, बीज, खाद, औषधियों का बढ़ता खर्चा, सरकार की गलत कृषि नीति, पढ़े-लिखे किसान पुत्रों को नौकरी न मिलना, सहकारी सेवा संस्था के न्यासी तथा प्रशासन का भ्रष्टाचार आदि कई कारणों से आज भारती कृषक जीवन दरिद्रता तथा विपन्नता का शिकार बना दृष्टिगोचर होता है। यहाँ 'फाँस' उपन्यास के लेखक 'संजीव' ने अपनी ओर से कुछ समाधान प्रस्तुत करके भारतीय किसान को विपन्नता तथा दरिद्रता से उबरने का प्रयास भी किया हुआ दिखाई देता है।